मिसाल-बेमिसाल

महिला व्यवस्थापक लिख रही है विकास की इबारत

राजस्थान में संभवत: राजसमंद की पीपरड़ा की लक्ष्मी ग्राम सेवा सहकारी समिति ऐसी ग्राम सेवा सहकारी समिति है जिसमें मुख्य कार्यकारी के रूप में महिला व्यवस्थापक द्वारा दक्षता और सफलता के साथ ग्राम सेवा सहकारी समिति का संचालन करते हुए मिसाल कायम की है। ग्राम सेवा सहकारी समिति के व्यवस्थापक का काम बेहद चुनौतीपूर्ण और भाग-दौड़ भरा होता है। समय पर ऋण वितरण की आवश्यक औपचारिकताएं पूरी कर ऋण उपलब्ध कराना, खाद-बीज, कीटनाशकों की संभावित मांग का आकलन कर उपलब्धता सुनिश्चित करवाना, स्वयं सहायता समूहों का गठन, कड़ी बंधन, समन्वय, ऋण वितरण व सहकारी ऋणों की वसूली, मिनी बैंक का संचालन और क्षेत्र की मांग के अनुसार अन्य कार्य संचालन का जिम्मा व्यवस्थापक पर ही होता है।यही कारण है कि ग्राम सेवा सहकारी समितियों में व्यवस्थापक पुरुष ही रहते आये हैं। पूरी तौर पर तो नहीं कहा जा सकता पर जहां तक जानकारी है राजस्थान में लक्ष्मी ग्राम सेवा सहकारी समिति ऐसी ग्राम सेवा सहकारी समिति है जहां महिला व्यवस्थापक कार्यरत है। वर्ष 2008 में लक्ष्मी ग्राम सेवा सहकारी समिति में श्रीमती इन्दिरा पालीवाल व्यवस्थापक के पद का जिम्मा संभाल रही है। श्रीमती लक्ष्मी पालीवाल ने बेहतर समन्वय, सूझ-बूझ और कार्यप्रणाली से आज समिति की तस्वीर ही बदल कर रख दी है। समिति हानि से उभर कर लाभ में आ गई है। सभी क्षेत्रों में समिति की उपलब्धियों का ग्राफ नई उंचाइयां छूने लगा है।

और बदल गई तस्वीर

उदयपुर केन्द्रीय सहकारी बैंक के कार्यक्षेत्र की लक्ष्मी ग्राम सेवा सहकारी समिति 2008-09 तक वित्तीय असंतुलन, लाखों रुपयों की हानि, कम किसानों को ऋण और अन्य मापदंडों पर किनारे पर चल रही थी। श्रीमती पालीवाल के प्रयासों और समिति के चुने हुए संचालक मण्डल के सहयोग से आज समिति की तस्वीर ही बदल गई है। 2008-09 में 280 ऋण सदस्य थे जो गत वित्तीय वर्ष में बढ़कर 1529 हो गए हैं। इसी तरह 39 लाख 97 हजार का ऋण वितरण बढ़कर 2 करोड़ 76 लाख रुपए हो गया है। समिति की हिस्सा राशि 7 लाख 80 हजार से बढ़कर 21 लाख 73 हजार हो गई है। 9 लाख रुपए का उर्वरक कारोबार बढ़कर 35 लाख 70 हजार हो गया है। ऋणों की वसूली में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है और 90 प्रतिशत से अधिक की वसूली होने लगी है।

वित्तीय प्रबंधन

श्रीमती पालीवाल ने कार्य संभालने के बाद सबसे पहला बड़ा काम मिनी बैंक खोलने का किया। इससे ग्रामीणों की जमाओं का संग्रहण होने लगा। समिति 2लाख 67 हजार रुपए के असंतुलन की स्थिति में थी, योजनाबद्ध प्रयासों से आज समिति में असंतुलन क्या होता है, कोई नहीं जानता। 2008-09 में 6 लाख 81 हजार की हानि में काम कर रही यह सहकारी समिति 2012-13 में 7 लाख 27 हजार रुपए के लाभ में आ चुकी है। स्वयं सहायता समूहों का गठन, कड़ीबंधन और ऋण वितरण वसूली के प्रयासों की नाबार्ड संचालित प्रशिक्षण संस्थान कई के प्रशिक्षण दल ने भी सराहा है।

उच्च शिक्षित श्रीमती पालीवाल ने ग्राम सेवा सहकारी समिति का सफल संचालन कर एक मिसाल कायम की है। उदयपुर के जिला प्रभारी श्री पंकज

अग्रवाल ने बताया कि यह अपने आप में एक उदाहरण है। काम करने की इच्छा शक्ति हो तो फिर कोई काम किसी के लिए मुश्किल नहीं है। उदयपुर केन्द्रीय सहकारी बैंक के प्रबंध संचालक श्री लोकेश गांधी ने बताया कि खास बात यह है कि समिति के अध्यक्ष श्री दलपत सिंह चौहान, संचालक मण्डल के सदस्यों और व्यवस्थापक के बीच बेहतर समन्वय का परिणाम है कि समिति उत्तरोत्तर प्रगति कर रही है।

माना जाना चाहिए कि इससे अब ग्राम सेवा सहकारी समिति के व्यवस्थापक के रूप में संचालन का जिम्मा संभालने की प्रेरणा भी महिलाओं को मिल सकेगी। आशा की जानी चाहिए कि आने वाले समय में लक्ष्मी ग्राम सेवा सहकारी समिति विकास के नित नए आयाम स्थापित करेगी।